

साड़ा पुं. (देश.) 1. घोड़े का एक प्राण-घातक रोग
2. बाँस का वह टुकड़ा जो नाव में मल्लाहों के बैठने के स्थान के नीचे लगा रहता है।

साड़ी स्त्री. (तद्.) स्त्रियों के पहनने की रेशमी धोती।

साढ़ी¹ स्त्री. (देश.) दूध की मलाई।

साढ़ी² स्त्री. (तद्.) विंशोत्तरी महादशा में शनि की महादशा के साढ़े सात वर्ष, साढ़े साती।

साढ़ू पुं. (तद्.) साली का पति, पत्नी की बहन का पति।

साढ़े वि. (तद्.) जो आधे के साथ हो।

साढ़े चौहरा पुं. (तद्.) मध्ययुग में, फसल की एक प्रकार की बँटाई जिसमें फसल का 5/16 भाग जमींदार को मिलता था और शेष 11/16 भाग काश्तकार को मिलता था।

साढ़े-साती स्त्री. (तद्.) शनि ग्रह की अशुभ और कष्ट-दायक दशा या प्रभाव जो प्रायः साढ़े सात वर्ष, साढ़े सात-महीने, या साढ़े सात दिन तक रहता है।

सात वि. (तद्.) जो गिनती में छह से एक अधिक हो।

सात कुंभ पुं. (तद्.+तत्.) 1. सोना 2. धतूरा 3. कचनार।

सातत्य पुं. (तत्.) 1. निरंतरता, सततता, अविच्छिन्नता
2. सदा बने रहने का भाव, स्थायित्व।

सातत्यक पुं. (तत्.) देश-काल की अविच्छिन्नता।

सात दिन पुं. (तद्.) 1. सूर्य को एक बार याम्योत्तर रेखा से चलकर पुनः वहीं वापस आने तक का काल, सावन दिवस 2. सौर दिन, 3. 60 दंडों का समय (2 1/2 दंड का घंटा)।

सात-पाँच पुं. (तद्.) 1. कुछ लोग 2. चालाकी और बहानेबाजी या शरारत की बातें मुहा. सात-पाँच करना- मुझसे इस प्रकार सात-पाँच मत किया करो।

सातपूती वि. (तद्.) जिसके सात पुत्र हों।

सातला पुं. (तद्.) थूहर पौधे का एक प्रकार।

सातव वि. (तद्.) सातवाँ।

सातवाँ वि. (तद्.) क्रम या गिनती में सात के स्थान पर पड़ने वाला।

सातहयजान वि. (तद्.) सात घोड़ों के रथ वाला पुं. सूर्य उदा. छली न हो स्वामी सनमुख ज्यों तिमिर सातहयजान।

सातिक वि. (तद्.) सात्विक।

साती स्त्री. (देश.) साँप काटने की चिकित्सा जिसमें साँप के काटे हुए स्थान को चीर कर उस पर नमक या बारूद मलते हैं।

सातु पुं. (तद्.) 1. साहूकार, सेठ 2. व्यवसायी 3. सज्जन, साधु।

सातें वि. (तद्.) सातवीं स्त्री. सप्तमी तिथि।

सात्म वि. (तत्.) आत्मा से युक्त, आत्मासहित।

सात्मयक पुं. (तत्.) व्यक्ति की उम्र और देश-काल के अनुकूल आहार-विहार 2. सरूपता, सारूप्य वि. 1. सात्मय संबंधी 2. व्यक्ति या रोगी की प्रकृति के अनुकूल स्वास्थ्यकर।

सात्म्य पुं. (तत्.) आयुर्वेद में रोग के पाँच निदानों में से चौथा, रोगी के रोग का निर्णय करने के लिए प्रयुक्त यह लक्षण कि रोग को क्या-क्या वस्तुएँ या क्रियाएँ सुख या आराम देती हैं और क्या-क्या कष्ट बढ़ाती हैं, उपशम।

सात्यकि पुं. (तत्.) कृष्ण का सारथि एक प्रसिद्ध यादव वीर जो सत्यक का पुत्र था।

सात्य रथि पुं. (तत्.) वह जो सत्यरथ के वश में उत्पन्न हुआ हो।

सात्यवत पुं. (तत्.) सत्यवती के पुत्र, वेदव्यास वि. सत्यवती-संबंधी, सत्यवती का।

सात्रजिती स्त्री. (तत्.) सत्यभाभा का एक नाम।

सात्राजित पुं. (तत्.) राजा शतानीक जो सत्राजित के वंशज थे।